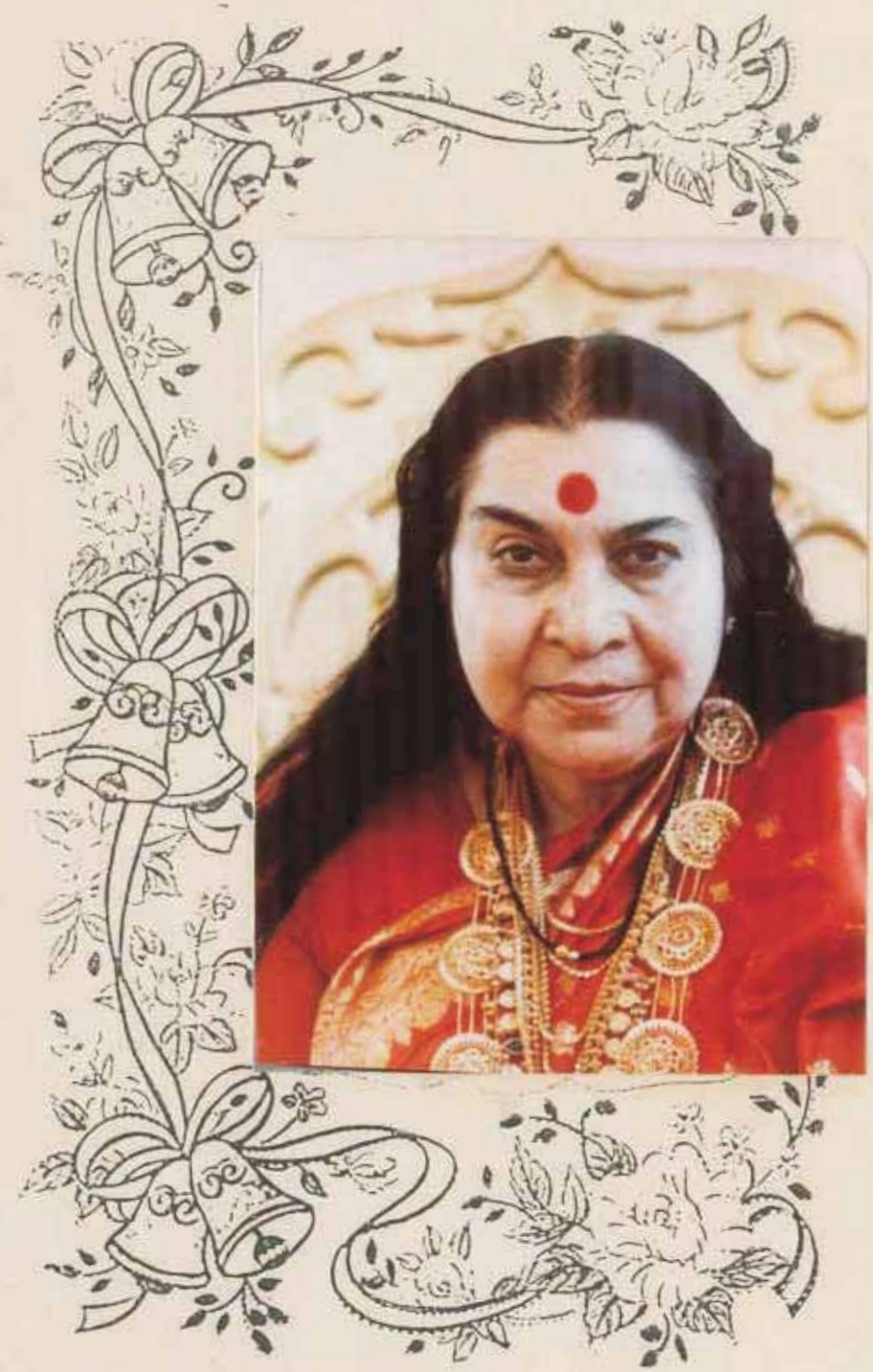

Christmas Greetings

श्री माता जी निर्मला देवी रूस यात्रा पर

सोवियत स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा नियोजित "प्रथम विश्व योग सम्मेलन" में श्री माता जी को विशिष्ट रूप से आमन्त्रित किया गया। सोवियत चिकित्सकों, वैज्ञानिकों तथा समाचार संवाददाताओं की पूरी सदन के सम्मुख श्री मां ने केवल भाषण ही नही दिया, सबको आत्मसाक्षात्कार भी प्रदान किया। सोवियत समाचारों तथा दूरदर्शन ने मां के भाषण का अत्याधिक प्रसारण किया। जनता की मांग पर 700 लोगों के लिए एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

श्रीमाता जी ने कीव तथा लेनिनग्राड में भी कार्यक्रम किये। अपने श्रोताओं के बहुत से प्रश्नों का उत्तर देते हुए श्रीमाता जी ने उन्हें विश्वास दिलाया कि अमेरिका के पूंजीवाद जिसने वहां के लोगों को पूरी तरह शठ बना दिया है, की तुलना में रूसी साम्यवाद ने उन्हें हानि नही पहुँचाई है। स्टालिन के विषय में उन्होंने कहा कि भूतकाल को भूल जाना ही हितकर है। श्री गोर्बाचोव एक आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति हैं। उनका समर्थन होना चाहिए। छोटी छोटी बातों के लिए उनका विरोध नहीं होना चाहिए। उन्होंने श्रोताओं से यह प्रश्न पूछने के लिए कहा कि क्या रूस अध्यात्मिकता में विश्व का नेतृत्व करेगा? सभी ने शीतल लहरियों का अनुभव किया। लेनिन ग्राड मास्को तथा कीव में मुख्य सहज-केन्द्र स्थापित कर दिये गये हैं। बहुत से अन्य नगरों से सहज कार्यक्रमों के लिए लगातार निमंत्रण आ रहे हैं। सहज उपचार प्रारम्भ करने के लिए सोवियत स्वास्थ्य मंत्रालय से एक प्रथम सीधे पत्र पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस वर्ष भारत यात्रा के लिए लगभग 30 रूसी सहज योगी भारत आयेंगे और हम सब उनका सहृदय स्वागत करेंगें।

19-10-1989 के सम्मेलन में मास्को विश्वविद्यालय में श्रीमाता जी के भाषण का सारांश

आज मैं यहां आपको हमारी योग पद्धति तथा उसकी ऊंचाइयों के विषय मे बताने आई हूँ। हमारे देश में तीन प्रकार के आन्दोलन हुए। ब्रह्माण्ड को चलाने वाले नियमों का पता लगाना प्रथम था। यह नियम प्रारम्भ में वेदों में विद्यमान थे।

---2

विद् अर्थात जानना, परन्तु सत्य का ज्ञान यदि न प्राप्त हो सके तो अध्ययन व्यर्थ है।

सत्य ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र इच्छा अर्थात् भक्ति या समर्पण - एक दूसरा प्रकार था। व्यक्ति का आत्म साक्षात्कार के लिए प्रयत्नशील तीसरा महत्वपूर्ण परन्तु गुप्त रास्ता था। पातांजली - जिन्होंने 8 भागों में सूत्र लिखें हैं - ने प्रारम्भ में तो योग के शारीरिक अंश जैसे यम नियम आदि के विषय में बताया परन्तु वे भी वही रूक नहो गये। लक्ष्य के रूप में आपने प्रेम की सूक्ष्म शक्ति जिसे मैं ऋतम्भरा-प्रज्ञा कहती हूँ - तक पहुंचना है। हमारे यहां गोरखनाथ, आदिनाथ तथा मीर्चननाथ से बहुत योगी हुए हैं। जिन्होंने मध्यम मार्ग से मनुष्य की समस्याओं तथा उसके उत्थान को सम्भव बनाने के लिए कार्य किया। उन्होंने मनुष्य की त्रिकोणाकार पांवत्र अस्थि में सुप्त शक्ति को खोज निकाला। एक सहस्त्र वर्ष पूर्व मार्कन्डेय जी ने इसके विषय में बताया। आठवी और नौवी शताब्दी में वासुगुप्ता ने इसक विषय में लिखा। अतः अपनी आत्मा को इस नए ज्ञान तक उत्थान करना ही शिखर या सर्वोच्च उपलब्धि है। हर धर्म में यही कहा है कि आप को शाश्वत को खोजना है और परिवर्तनशील वस्तुओं से उनकी सीमाओं में ही व्यवहार करना है। परन्तु सारे धर्म पूर्णतया भटक गये हैं। इन्होंने भयानक कट्टरताएं दी है। धर्म के नाम पर लोगों ने लड़ना शुरू कर दिया है।

यह शक्ति हर मनुष्य की त्रिकोणाकार अस्थि में रहती है। अमीयोबा से मानव बनने की विकास प्रकिया में हमारे मध्य स्नायु पद्धति में कई सूक्ष्म चक्रों की सृष्टि की गई। वे हमारे (पैरा सिम्पेथेटिक नरवस सिस्टम) सूक्ष्म स्नायु मण्डल में है।

सत्य को खोजते समय हमें ये जानना है कि सत्य जो है वही है। जिस अवस्था को आप प्राप्त करते हैं आप स्वयं उसे नही देख सकते। जैसे प्रकाश स्वयं को नही देख सकता। अपने मध्य स्नायु मंडल पर हमें उस सर्वत्र व्यापक शक्ति को तथा उसकी कार्य प्रणाली को जानना है। और ऐसा हम कर सकते हैं। मानव चेतना से हम सत्य को नही जान सकते। हमें आत्मा बनना है। आत्मा का स्थान सिर के तालू भाग में है। समस्या कुंडलिनी को उठाकर तालू भाग से बाहर निकालना और उसका संबंध सर्वव्यापक शक्ति से जोड़ना है।

---3

कुंडलिनी जब उठती है तो छः चक्रों में से होती हुई यह सिर के तालू भाग को भेदती है और यह हमारे शारीरक, भावनात्मक, मानसिक तथा अध्यात्मक तन्त्रों का पोषण करती है। यह विकास की चरम उपलब्धि है। यह जीवन्त किया है जो स्वतः ही घटित होती है। अपनी अंगुलियों के पोरों पर आप इसे ठंडी लहरियों के रूप में अनुभव कर सकते हैं। तब आपको अपनी समस्याएं समझ आएंगी।

आधुनिक काल में हम इतने व्यस्त हैं कि हमारे पास किसी चीज के लिए समय नहीं। अतः आधुनिक सहज योग का विकास इस प्रकार किया गया है कि पहले आप आत्म साक्षात्कार को पा लें, एक आरम्भ आपको प्राप्त हो जाए और थोड़ी सी ज्योति जो आपको मिल जाएगी उसके प्रकाश में अपनी त्रुटियों को देख सकें। ज्ञान अनन्त है। जब आप इस कक्ष में आ जाते हैं तो प्रकाश का बटन दबाते ही आप को सारी प्रकाश प्रणाली का पता लग जाता है। विद्युत के स्रोत तथा इतिहास को जानने के स्थान पर यदि बिजली जला लें तो अच्छा है। इस प्रकार सहज योग कार्य करता है।

"आप में से हर व्यक्ति एक चमत्कार है। आपकी मुखाकृतियों में, मैं एक अनुपम परिवर्तन पाता हूं। परमात्मा ने थोड़े से देवदूतों की सृष्टि करनी चाही थी परन्तु यहां तो बहुत से हैं। मैं स्वयं को एक नये विश्व में पहुंचा हुआ पाता हूं। एक पूर्णतया भिन्न और कहीं ज्यादा सुन्दर विश्व में।"

श्री सी. पी. श्रीवास्तव

(दीवाली पूजा के अवसर पर)

श्री गणेश पूजा

10 अगस्त, 1989 लौस डायबलर्टस, स्विटजरलैंड

पूजनीय श्रीमाता जी द्वारा

हर पूजा से पहले हम श्री गणेश का गुणगान करते हैं। श्री गणेश निर्मलता के प्रतीक हैं। इसी कारण हमारे मन में उनके लिए अत्याधिक मान है। जब तक श्री गणेश हमारे अन्दर जागृत नहो हो जाते हम परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश नहीं पा सकते। हमें श्री गणेश जी के आशीर्वाद का आनन्द लेना है। और अपनी निर्मलता को अपने अन्दर पूर्णतया विकसित करना है। अतः हम उनका गुणगान करते हैं और वे सहज ही प्रसन्न हो जाते हैं। शाश्वत निर्मल शिशु-स्वाभाव के कारण वे हमारे उन सब अपराधों को क्षमा कर देते हैं जो हमने सहज में अपने से पूर्व किये होते हैं। बच्चे तो आपने देखें हैं। आप उनसे कभी नाराज हो जाते हैं और कभी तो उन्हें थप्पड़ भी मार देते हैं। पर बच्चा सब कुछ भूल जाता है। माँ की कोख से जन्म लेने के समय से ही बच्चा अपनी सभी यातनाएं भूल जाता है। परन्तु शनैःशनै जब उसकी स्मरण-शक्ति कार्य करना शुरू करती है तो वह अपने अन्दर कार्यों को छाप इकट्ठी करनी शुरू कर देता है। शिशुकाल में बच्चे केवल प्रेम करने वालों को ही याद रखते हैं। परन्तु बड़े होने पर वे केवल उन्हीं को याद रखते हैं जिन्होंने उन्हें हानि पहुंचाई हो। और इस प्रकार वे अपने जीवन को दुखों से परिपूर्ण कर लेते हैं परन्तु गणेश तत्व बहुत ही सूक्ष्म है। यह हर वस्तु में विद्यमान है।

भौतिक-तत्वों में भी यह लहरियों के रूप में विद्यमान है। कोई भी पदार्थ बिना लहरियों के नहीं होता। पदार्थ के अणु-परमाणुओं में भी लहरियां पायी जा सकती हैं। अतः जड़ में भी सर्व प्रथम श्री गणेश की स्थापना की गई। परिणामतः वे सूर्य, चन्द्र पूरे ब्रह्माण्ड तथा परमात्मा की हर सृष्टि में विद्यमान हैं। और वे प्राणी मात्र में भी मौजूद रहते हैं। मनुष्य अपने गणेश तत्व के इस निर्मल गुण पर पर्दा डाल सकता है। वह यह भी कह सकता है कि गणेश जी हैं ही नहीं। इसी कारण ही हम मनुष्यों को भयानक अपराध करते देखते हैं। परन्तु श्री गणेश सदा कार्यरत रहते हैं। हमारे

अपराधों के स्वाभाविक दुष्परिणामों को दिखा कर वे अपनी उपस्थिति का आभास कराते हैं। उदाहरण के रूप में यदि आप गणेश जी को नापसन्द कार्य करते हैं तो वे पहले तो एक सीमा तक क्षमा करते हैं परन्तु तत्पश्चात उनकी असंतुष्टि पुरुषों में शारीरिक तथा स्त्रियों में मानसिक रोगों के रूप में प्रकट होने लगती है। यह प्रकृति में भी समस्याएं उत्पन्न कर सकते हैं। प्राकृतिक प्रकोप भी श्री गणेश का ही अभिशाप हैं। जब लोग सामूहिक रूप से बुरे कार्य, दुर्व्यवहार करने लगते हैं तो उन्हें शिक्षा देने के लिए प्राकृतिक प्रकोप आते हैं। यद्यपि श्री गणेश सर्वत्र विद्यमान हैं फिर भी उनका सार-तत्व दृढ़तापूर्वक अपनी इच्छा को प्रकट करने की उनकी सामर्थ्य तथा अपनी इच्छा से सम्पूर्ण विश्व को विध्वंस कर सकने की उनकी शक्ति में निहित है।

श्री गणेश को एक सूक्ष्म अस्तित्व के रूप में हम मानते हैं क्योंकि मूषक उनका वाहन है अतः हमारे विचार में वे बहुत ही सूक्ष्म हैं। वे जितने सूक्ष्म हैं उतने ही महान भी हैं। अपनी बुद्धि के कारण वे देवताओं में सर्वोपरि हैं। विवेक के दाता वे हमें सीखने पर विवश करते हैं। वे हमें आचरण करना सिखाते हैं इसी कारण वे हमारे गुरु ही नहीं महागुरु हैं। आपने यदि उनकी उपेक्षा करने का या उनसे दुराचरण करने का प्रयत्न किया तो श्री माँ भी आपका साथ नहीं देंगी। श्री गणेश जी की अवज्ञा करने वाले लोग कभी श्री माँ का आदर नहीं कर पायेंगे। श्री गणेश और किसी देवता को नहीं मानते अतः माँ के प्रति समर्पण ही उनकी शक्ति है। इसी कारण वे सब देवताओं से अधिक शक्तिशाली हैं। शक्ति में कोई उनके समान नहीं।

हमें यह समझना है कि जैसे-जैसे बच्चे बढ़ते हैं श्री गणेश भी उनके साथ बढ़ते हैं। मनुष्य स्वभाववश बच्चे श्री गणेश को पराजित करने का प्रयत्न कर सकते हैं। अतः माता-पिता का कर्तव्य है कि निर्लिप्त भाव से अपने बच्चों की परवरिश करें जिससे कि बच्चों के अन्दर का गणेश तत्व स्थापित हो सकें। विवेक बच्चों के अन्दर श्री गणेश जी का पहला चिन्ह है। यदि बच्चा बुद्धिमान नहीं है, यदि वह कष्टदायक है और सद्व्यवहार नहीं जानता तो स्पष्ट होता है कि वह श्री गणेश की अवज्ञा कर रहा है। वर्तमान युग में बच्चे गणेश तत्व की अवज्ञाग्रस्त है। निर्मलता का अतिक्रमण हो रहा है और लोगों के लिए यह निर्णय कर ले पाना कठिन हो रहा है कि कहां तक बच्चों का साथ दे और कहां उनका साथ छोड़ दें।

श्री गणेश विवेक के दाता हैं। अतः माता-पिता को अवश्य समझना है कि "यदि वह विवेक प्रदान करने वाले हैं तो मुझमें भी विवेक होना चाहिए। और यदि मुझे विवेक है तो मुझमें संतुलन है और मैं बच्चों पर कभी क्रोधित न हूँगा। परन्तु उन्हें उस प्रकार सुधारने का प्रयत्न करूँगा जिस प्रकार वे सुधरेंगे"। उसके विपरीत यदि आप अपने बच्चों के प्रति कठोर होने का प्रयत्न करेंगे तो प्रतिक्रिया वश वे भटक भी सकते हैं। तो श्री गणेश की तरह ही अपनी माँ का सम्मान करना आप अपने बच्चों को सिखाइये। आपकी माँ जो कि पवित्र माँ है और जो आपकी अपनी है। यदि पिता बालक को माँ का सम्मान नहीं सिखाता तो वह बालक कभी ठीक नहीं हो सकता। यद्यपि अधिकार भाव पिता की ही देन है। फिर भी माँ का सम्मान होना ही चाहिए। इसके लिए यह अति आवश्यक है कि माँ भी पिता का मान करें। बच्चों के सामने माता-पिता का आपसी झगड़ा उनके गणेश तत्व पर अति बुरा प्रभाव डालेगा। सहज योग में बच्चों के पालन पोषण का बहुत महत्व है क्योंकि ईश्वर कृपा से आप सब के बच्चे जन्म से आत्म साक्षात्कारी हैं। आप सब को अवश्य पता होना चाहिए कि किस प्रकार आप अपने बच्चों को विवेकशील, सद्चरित्र तथा पवित्र बना पाएंगे। सर्वप्रथम उनके विवेक की रक्षा करने का प्रयत्न कीजिए। यदि वे कोई अच्छी बात कहें तो उनकी प्रशंसा करें। परन्तु यह बात असमय पर तथा अशिष्टता पूर्वक नहीं कही होनी चाहिए। अतः दुराचरण सहन नहीं किया जाना चाहिए अर्थात आन्तरिक विवेक प्रकाश के रूप में बाहर प्रकट होना ही चाहिए।

श्री गणेश कहां तक कार्य करते हैं? ये देखने के लिए अब हम और अन्दर पैठते हैं। उदाहरणतया जिस पानी को हम चैतन्यित करते हैं वास्तव में हम उसमें गणेशतत्व ही जागृत करते हैं। वह पानी आप के पेट में, आंखों में या और जहां कहीं आप उसे डालतें हैं वहां गणेश तत्व को ही जागृत करता है। कृषि में इसके चमत्कार आपने देखें हैं। किसी बीज में यदि आप गणेश तत्व जगा दें तो वह दस गुणा-सौ गुणा बड़ा हो जाता है। पृथ्वी माँ-जिसे हम बेजान समझते हैं - भी चैतन्यित की जा सकती है। सहज योगी यदि पृथ्वी पर नंगे पांव चले तो वह चैतन्य से भर जाती है। यह चैतन्य, पेड़ो, घास, फूलों आदि हर वस्तु पर कार्य करता है।

जागृत होने पर गणेश तत्व सब कुछ समझता है, वह सब व्यवस्थित और कार्यान्वित करता है। बीज के अंकुरण के समय उसकी नोक पर एक अणु में निहित गणेश तत्व जागृत होता है। इससे ज्ञात होता है कि नीचे की ओर या पत्थर के चारों ओर किस प्रकार पानी के स्रोत तक पहुंचना है। परन्तु इसका ज्ञान यही तक सीमित होता है कि जीवित रहने के लिए कहां तक जाना है, बहुत ही स्थूल सतह तक अपना पोषण कैसे करना है और पेड़ को बढ़ने कैसे देना है। परन्तु यही गणेश तत्व आज्ञाचक पर आकर बहुत ही सूक्ष्म बनना शुरु हो जाता है। आज्ञा चक पर यह अपना अध्यात्मिक दायित्व भी समझता है। वही गणेश तत्व जिसने जड़ की नोक पर कार्य किया वही अब अध्यात्मिकता के लिए कार्य करता है। इसी कारण ध्यान के समय लोग अपनी आंखें बंद कर लेते हैं। वे श्री गणेश को अपनी कुंडलिनी को ध्यान प्रकिया के लिए कार्य करता हुआ देखना चाहते हैं। और कुछ वे नहीं देखना चाहते। जब हम आँखें बन्द करते हैं तो ध्यान की यह प्रकिया कार्य करती हैं। सोने के समय भी आंखें हिलती डुलती रहती हैं।

यह गणेश तत्व अब आपके चित द्वारा परिचालित होता है। आपके अस्थिर चित का प्रभाव इस पर पड़ता है। हर समय यदि हम स्त्रियों या पुरुषों को ही ताकते रहें तो भी हमारे गणेश तत्व का नाश हो जाता है। इस प्रकार के लोगों का उत्थान कठिन हो जाता है क्योंकि उनका आज्ञाचक ही विरुद्ध हो जाता है। अत्याधिक भौतिकता और वस्तुओं की चिंता भी गणेश तत्व पर कुप्रभाव डालती हैं। इस अवस्था में इसका लोप भी हो सकता है जैसे किसी दुकान पर जाकर हम हर चीज को खरीदने के लालच से भर जायें। परन्तु यदि आप कोई सुन्दर वस्तु दूसरों को प्रसन्न करने के लिए खरीद रहे हैं तो इसका प्रभाव आप के गणेश तत्व पर अच्छा पड़ेगा। किसी वस्तु विशेष को सुन्दरता का मिल कर आनन्द लेना आप के उत्थान को बढ़ावा देगा। यदि दूसरों को जलाने को भाव से आप कुछ खरीदते हैं तो आपका गणेश तत्व नाश भी हो सकता है।

यह एक बहुत ही मातृत्य युक्त गुण है। जिस प्रकार माँ अपने बच्चों को प्रसन्न रखना चाहती है, उन्हें खाना देना चाहती है उसी प्रकार आप में भी वत्सलता होनी चाहिए और उसी प्रकार आपको महान गणेश तत्वव को सन्तुष्ट करना चाहिए। कलाकार जब

स्वाधिष्ठान द्वारा किसी पदार्थ में से सुन्दर कलाकृतियां बनाते हैं तो आप उन पर ध्यान देते हैं। जब तक श्री गणेश स्वाधिष्ठान के शासक नहीं होंगे कोई भी कृति सुन्दर नहीं बन सकती। आजकल हास्यास्पद तथा अनैतिक भावों की ओर झुक रहे हैं। इन कृतियों का कोई शाश्वत मूल्य नहीं है। लोग आज इन्हें खरीदेंगे और कल फैंक देंगे। केवल वही वस्तु जिसमें गणेश तत्व जागरूक है और जो आपको शांत और प्रसन्न रख सकती है, प्रशंसनीय है।

अतः श्री गणेश आपके अन्दर महान व्यक्तित्व को स्थापित करते हैं और आपके तुच्छ अंशों को जो कि जीवन की विकृतियों का आनन्द लेते है या तो कम कर देते हैं या पूर्णतया नष्ट कर देते हैं। मोनालीसा को देख कर आप जानेगें कि वह न तो अभिनेत्री हो सकती है और न ही कोई सौंदर्य स्पर्धा जीत सकती है फिर भी उसका चेहरा बहुत ही शान्त, पवित्र और मातृत्वपूर्ण है। इसका कारण उसके अंदर का गणेश तत्व है। यह माँ है। कहानी इस प्रकार है कि बच्चा खो जाने पर यह स्त्री न कभी रोई और न ही मुस्कराई। एक बार एक छोटा बच्चा उस के पास लाया गया। उसने बच्चे को देखा। बच्चे के प्रति उसके प्यार की मुस्कराहट जो उसके चेहरे पर उस समय प्रकट हुई उसी को इस महान कलाकार ने मोनालीसा पर दर्शाया है। अपने अंडे तोड़ कर उनसे बच्चे बाहर निकालते हुए मगरमच्छ आंखों से भी सौम्य और माधुर्य छलक पड़ता है। परन्तु आधुनिक बन कर आपके कार्य हास्यास्पद हो जाते हैं। अतः अपने बच्चे के प्रति आपके प्रेम का अत्याधिक महत्व होना चाहिए। परन्तु सहज योगी होने के नाते आपको बच्चे से लिप्त भी नहीं होना चाहिए।

अपने प्रेम को सीमाबद्ध करना आपको जानना है। उदारता ही सीमा है। क्या यह मेरे बच्चे के हित में है। क्या मैं अपने बच्चे को बिगाड़ रही हूँ। क्या मैं अपने बच्चे के हाथों में खेल रही हूँ या मैं बच्चे को ठीक तरह से चला रही हूं? क्यों कि माता-पिता ही बचपन में बच्चों का मार्ग-दर्शन करते हैं। बच्चों को भी आज्ञाकारी होना हैं। माता-पिता स्वयं ही एक दूसरे के प्रति आज्ञाकारी नहीं है। वे जानते हैं कि समाज ही ऐसा है जहां कि बच्चे मां-बाप को परेशान करते रहते हैं। अतः वे भी वैसे ही बन जाते हैं। चिन्ता की कोई बात नहीं। आप सहज योगी हैं अपने बच्चों का पोषण इस

प्रकार कीजिए कि वे आज्ञाकारी, बुद्धिमान तथा विचारवान बनें। बच्चों को उसी तरह निर्लिप्त प्रेम करें जैसे एक मगरमच्छ अपने छोटे बच्चे को करता है।

जीवन में परस्पर मधुर सम्बंध बनाने के लिए ये सब कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण है। जो हम से छोटे हैं, आर्थिक रूप से ठीक नहीं है, जो अधिक गुणवान नहीं है, जिनके पास सहज योग का पर्याप्त ज्ञान नहीं है और जो सहज योग में अधिक पुराने नहीं है आपको उनकी एक पिता, एक मां की तरह से देखभाल करनी है। आपके पास गणेश तत्व है। उसे जागृत कीजिए। अध्यात्मिक उत्थान को प्राप्त करने के लिए वे सब हम पर निर्भर रह सकें। क्योंकि गुरु तत्व पूर्णतया गणेशतत्व से बंधा है अतः गणेश तत्वहीन व्यक्ति बहुत ही विकृत हो जाता है।

जीवन एक निरंतर प्रकिया है और मनुष्य को सदा विराट से जुड़े रहना है। जब तक आप पूरी तरह विराट से नहीं जुड़ें हैं आप विमलता की सामूहिकता को उसी तरह नहीं समझ सकतें जैसें एक बच्चा आकर किसी दूसरे की गोद में बैठ जाता है उसे ये नहीं पता होता कि कौन मां है और कौन पिता। उसके लिए सब एक से हैं। अब हम गणेशतत्व को (जो कि चैतन्य लहरियाँ है) सर्वत्र व्यक्त करने का साधन, यंत्रय तथा हेतु मात्र हैं। अतः यह लहरियाँ गणेश तत्व के सिवाय कुछ भी नहीं है। यही ओंकार है। यही वात्सल्य भाव है, यही माँ बच्चे के बीच प्रेम-भाव है। मां-बच्चे के बीच की दूरी लहरियाँ ही हैं। मनुष्य को यही महसूस करना है कि अभी भी वह शिशु ही है। और माँ बच्चे को सारी शक्तियां दे रही है। बच्चे का लालन-पालन, उसके प्रति प्रेम, उसकी सीमाओं की समझ, उसके माधुर्य और विवेक की देखभाल सभी को समझना है। यही लहरियाँ हैं।

मनुष्य और देवताओं के बीच सारे सम्बंध गणेश तत्व से हैं। जब आप ईश्वर से संबोधित होते हैं तो लहरियाँ बहती है। वही संबंध आपके हर कार्य से व्यंजित होना चाहिए। आपको देखना चाहिए कि जो कुछ भी अच्छा है उसमें लहरियाँ हैं।

आज मैं आपको सर्वव्यापक शक्ति (जिसके बारे में हमने सुना हुआ है) के विषय में कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण बात बताना चाहती हूँ। यह शक्ति लहरियों के सिवाय कुछ नहीं है। परम चैतन्य जहां सब व्यक्तित्व समाप्त हो जाता है - लहरियों के अतिरिक्त

कुछ भी नही। जहां माता-पिता सब विलय हो जाते हैं, कुछ भी बाकी नही रहता। जहां केवल सूक्ष्म वात्सल्य ही रहता है बस। और केवल यही वस्तु है जिसमें से हर चीज निकलती है और अपने आप में स्थिर हो जाती है। उदाहरणतया - सूर्य की किरणें जब निकलती हैं तो क्लोरोफिल बनाती हैं। या सागर से उठे हुए बादल पृथ्वी मां का पोषण करने का प्रयत्न करते हैं। हर चीज इसमें हैं। इस परम चैतन्य के अन्दर सभी कुछ निहित है। हम कह सकते हैं कि सभी कुछ केवल ज्ञान, सत्य और प्रकाश के अतिरिक्त कुछ भी नही। परन्तु जब इनकी परतें प्रकट होती हैं तो हम उस चैतन्य की परतों की लपेट में आकर विवेकहीन हो जाते हैं। अज्ञानता अस्तित्वहीन है। प्रकाश के अभाव में अंधेरा होता है। ज्योंही प्रकाश होता है अंधेरा अस्तित्वहीन हो जाता है। लोग चैतन्य सागर की तहों में खो जाते हैं। अतः हमें सावधानी पूर्वक समझना है कि हम परम चैतन्य में हैं, परम चैतन्य द्वारा ही हम बनाये गए है, हर समय हम इससे घिरे हैं। बस कभी-कभी हम इसकी परतों में खो जाते हैं। और हम खो क्यों जाते हैं? अपने अज्ञान के कारण।

यह ज्ञान आता है कि हम विराट के ही अंश हैं। यह सब चितविलास कहलाता है - परमचित की मधुर चंचलता का आन्नद। अब आप कहेंगे "यह कैसे हो सकता है" उदाहरण के रूप में हम सूर्य को देखते हैं फिर हम झील में पानी को देखते हैं। सूर्य के कारण ही हम पानी को देख सकते हैं फिर मान लीजिए कि हम मृग-तृष्णा देखतें हैं और सोचतें हैं कि पानी हैं और हम पानी के पीछे दौड़ते हैं। परन्तु यह सब कुछ सूर्य का खेल मात्र है। इसी प्रकार परम चैतन्य कार्य करता है और अपने बुद्धि चातुर्य में भटक कर हम भूल जातें है कि हम परम चैतन्य ही हैं। इस तरह लीला शुरु होती है।

जब आप बंधन देतें हैं तो चैतन्य को कार्यान्वित करते हैं। कोई भी कार्य करतें हुए आपको ज्ञात होना चाहिए कि केवल परम चैतन्य ही कार्य करता है। आपको केवल आत्मज्ञान होना चाहिये और यह भी पता होना चाहिये कि यह (परम चैतन्य) कार्य करता है। आप केवल उस समाधि में कूद पड़िये - यह कार्य करेगा। बहुत से लोग यद्यपि बुद्धि से यह सत्य जानते हैं, अपने हृदय में वे इसे अनुभव नही करते और बहुत

से लोग जो इसे अपने हृदय में अनुभव करते हैं वो अपने चित से कार्य नही करते। अतः आपने केवल इन तीन चीजों को सुधारना है। पहला आपका मस्तिष्क, दूसरा आपका हृदय और तीसरा आपका जिगर। यदि आप इन तीन अंगों को सुधार सकते हैं तो परम चैतन्य कार्य करेंगा। परन्तु धन पर इतना चिन्त देना व्यर्थ है। परम चैतन्य आपको सब कुछ उपलब्ध करायेगा। मगर अति-बोधिकता के अभाव में यह धन न भी बनाए तो भी यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि यह उसके लिए सम्भावनाएं उत्पन्न कर देगा। और यह जानना अति सुखद है कि अब आपको परम चैतन्य का ज्ञान है और आप इसे वश में कर सकते हैं। इस पर प्रभुत्व जमाये बिना अपने एक जिन्न की भाँति आप इससे कह सकते हैं "यह करो" "वो करो"। आदर पूर्वक यह आपके कार्य करेगा। जब आप स्वयं को परम चैतन्य के घेरे में जानेंगे तभी आप अति मधुर, अति प्रिय, सनेही तथा विवेकशील बन सकेंगे।

आपको ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त हो।

++

श्रीमाता जी का दीवाली पूजा वार्ता

मोन्टेसेटिनी इटली 29-10-1989 (सारांश)

परमात्मा के आनन्द का अनुभव ही दीवाली पूजा का लक्ष्य है। लगभग 1000 वर्ष पूर्व श्री राम के राज्याभिषेक के उपलक्ष्य में दिवाली मनाई गई थी। अर्थात उस दिन मानव-हित का राज्याभिषेक हुआ। सुकांत द्वारा बताये गए परोपकारी सम्राट के गुण श्री राम में थे। परोपकारी राजा का अभिषेक एक आनन्ददायक घटना थी। इस प्रकार का कार्य तभी सम्भव है जब लोग ऐसे व्यक्ति का चयन करें - प्रजा हित ही जिसका एक मात्र लक्ष्य हो। इस प्रकार का लक्ष्य एक सहजयोगी का होता है। अतः हम इस तथ्य तक पहुंचते हैं कि व्यक्ति को सहज-योगी बनना है।

पूंजीवाद और साम्यवाद दो प्रकार के सिद्धांत हैं। पहला धन संचालित है जबकि दूसरे का आधार आज्ञा-पालन है - जो कि सहज योगियों के लिए सर्वोत्तम है। साम्यवादियों में आज्ञापालन की भावना इतनी अधिक है कि अपने हित की कोई बात सुनते ही वे इसे मान लेते हैं। वे बहुत बुद्धिमान और गहन हो गये हैं। इसके विपरीत हम अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता में खो गये हैं। पूंजीवादी देशों में हित-भाव समाप्त हो गया है। जब आपको पागलों की भांति व्यवहार करने की स्वतंत्रता प्राप्त हो जाती है तो आप अपना सर्वनाश कर लेते हैं। उदाहरण के रूप में लोग किसी भी विवेकहीन फैशन के दीवाने हो जाते हैं। उग्रमी लोग जो आपका अनुचित लाभ उठाना चाहते हैं इस प्रकार के विचार उनको देन हैं। परोपकार सर्वोच्च है। यदि हम वास्तव में स्वतंत्र हैं तो हमें अपने हित की हर बात मान लेनी चाहिए।

दीवाली से दूसरे दिन ईश्वर ने नर्कासुर नाम के राक्षस का वध किया। आज दुष्ट लोग पुरस्कृत हो रहे हैं। यह दोष क्यों? दुष्कार्यों का आनन्द लेने वाली हमारी दुष्प्रवृत्ति का ही अन्त होना चाहिए। हमें समस्याओं को पहचानना है। आत्मावलोकन करने पर आपका हृदय खुलता है। बिना हृदय खुले आप आत्मानन्द नही ले सकते। हृदय खुलते ही आपके सब बंधन टूट जायेंगे। छोटी-छोटी चीजों में भी आनन्द का अंश होता है। अपनी जाति, राष्ट्रीयता आदि को भुला दीजिये। यदि आप सामूहिकता का अंश नही बन पाते तो आप में कुछ दोष अवश्य हैं।

दिवाली के दिन देवी लक्ष्मी की पूजा होती है। वे गर्व हीन हैं। दूसरों पर भार नहीं डालती। परन्तु मानव-आचरण इसके विपरीत है, धन मिलते ही मनुष्य घोड़े पर सवार हो जाता है। लक्ष्मी जी पानी में से अवतरित होती है, कमल पर विश्राम करती हैं तथा स्वयं को भार-हीन कर लेती हैं। हमें भी स्वयं को अपनी पदवी, वैभव तथा शिक्षा के अहं से मुक्त कर लेना चाहिए, इस प्रकार मूर्खता आप में अहं भार बढ़ाकर आपको अधोपतन की ओर ले जाती हैं। लक्ष्मी जी संतुलित खड़ी होती हैं। उनका गुरुत्व केन्द्र सुन्दर प्रकार से संतुलित है। इसी प्रकार आपको भी सन्तुलित होना है। आपको पृथ्वी मां पर आश्रित होना है जिससे जरा सी भी घटना के होते ही आप सन्तुलन में आ जाँए। लक्ष्मी जी के दो हाथों में गुलाबी कमल है। गुलाबी रंग उनके स्नेह, आतिथ्यभाव तथा आनन्दमुद्रा को प्रकट करता है। एक धनी व्यक्ति के द्वार पर 10 कुत्ते खड़े हों। कोई भी, एक कुत्ता तक भी, अन्दर न आ सके। इस धन का क्या लाभ। कोई अति, आडम्बर या अतिक्रमण नहीं होना चाहिए। कुछ ऐसा हो जो दूसरों को आनन्द तथा सुख दे सके। यदि अतिथि किसी वस्तु की प्रशंसा करे और मेजबान यह कहे कि उसने उस वस्तु विशेष को बहुत ही सस्ते में प्राप्त किया है तो इससे प्रकट होगा कि वह व्यक्ति अपने अतिथि को आनन्दित करना चाहता है। वस्तु को मंहगा बताना आक्रामक होना है।

आपको हर चीज में से आनन्द प्राप्त करने की योग्यता होनी चाहिए अन्यथा आप सहजयोगी नहीं है। आपको कलाकारों को प्रोत्साहित करना है। कहा जा सकता है कि यह ईमानदारी नहीं है। कमल कीचड़ में उत्पन्न होता है परन्तु आप कीचड़ को नहीं देख पाते। कमल अपने सौंदर्य तथा सुगन्धि से पूरे तालाब को ढक लेता है। इसमें कपटता की कोई बात नहीं। एक सहज योगी होने के नाते अपने कार्य को समझने में ही निष्कपटता है। अपने प्रेम से आप सबको प्रोत्साहित करते हैं। प्रेम से ही आप सबकी सहायता करते हैं। सब में आत्म विश्वास उत्पन्न करते हैं। स्वयं से निष्कपट होना ही महत्वपूर्ण है। बुद्धि से देखें कि दूसरे को चोट पहुंचाने के लिए यदि आप कुछ कहने वाले हैं तो ऐसा न करें। दूसरों को प्रसन्न रखने से ही आपको प्रसन्नता प्राप्त हो सकती है। जो लोग कभी न मुस्कराते हों उनहें आप गुद-गुदाइयें। आपको बाल सुलभ हो जाना है। आनन्दमय हो जाना ही लक्ष्मी जी की विशेषताओं में से एक है।

---6

दूसरे हाथ से लक्ष्मी जी देती हैं। वैभवशाली व्यक्ति को गुप्त रूप से आवश्यकता ग्रस्त लोगों को धन देना चाहिए। एक हाथ ने क्या दिया इसका ज्ञान दूसरे हाथ को नहीं होना चाहिए। व्यक्ति की आवश्यकता को समझ कर उचित समय तथा स्थान पर देना ही आवश्यक है। यह रोमांचित करने के लिए नहीं होना चाहिए। इससे हृदय का उत्थान हो। अध्यात्मिक उन्नति के लिए देना ही उत्तम है। उदाहरणतया मेरे लिए एक पुष्प ही पर्याप्त है। मैं अपने आप में पूर्ण हूँ।

एक और हाथ से लक्ष्मी जी रक्षा करती हैं। यह हाथ सभी सहज योगियों के लिए रक्षा का हाथ है। सहजयोगी में क्योंकि आत्मा विद्यमान है। मैं सदा उनके साथ हूँ। कलाकारों, कला, कविता, साहित्य, निश्छल राजनीतिज्ञों तथा न्याय-परायण राज्य-कर्मचारियों की, और उन सब लोगों की जिन्हें रक्षा की आवश्यकता है रक्षा करो। परन्तु अनुचित को आश्रय नहीं देना चाहिए। हमें दूसरों की अच्छाई की रक्षा करनी है। वह सहज योगी है या नहीं हमें उनके चारित्रिक गुणों की रक्षा करनी है। आप शाश्वत, असीम और विश्व रक्षक हो। आपको अत्याचारी नहीं होना चाहिए। किसी सास-बहू को लड़ते देख हम उन्हें "झगडालू" कहते हैं परन्तु हम स्वंय भी वैसा ही करते हैं। हम कटार नहीं हैं हम कमल-पुष्प हैं। कमल से चोट कैसे करनी है? यह जानने के लिए हमें सहज योग में गहन होना है।

लक्ष्मी की छत्र-छाया प्राप्त होने पर आप महा-लक्ष्मी तत्व में बदते हैं। तब आप विश्व-हितार्थ सोचते हैं कि लोगों को आत्म साक्षात्कार कैसे दिया जाये। आपका दृष्टिकोण परिवर्तित हो जाता है। हम समस्या समाधान के लिए हैं। हमें दायित्व लेना है। यदि आप एक निर्माता हैं तो कुछ महान सृजन कीजिये यदि आप संगीतज्ञ हैं तो सुन्दर संगीत की रचना कीजिए, यदि आप एक सरकारी कर्मचारी हैं तो अपना कार्य भली-भांति कीजिए। मैं तुम्हारी सहायता करूंगी। सबका व्यक्तित्व निखरेगा। सुषुमना के मध्य मार्ग पर यदि आप रहते हैं तो कोई आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यदि आप दूसरों में दोष ढूंढते हैं या दूसरों को वश में करने का प्रयत्न करते हैं तो आप सहजयोगी नहीं हैं। नेताओं को भी अधिकार जमाने का प्रयत्न कतई नहीं करना चाहिए। सम्पूर्ण ब्रहम-चैतन्य एक शान्त तत्व है यही सब कुछ चला रहा है। अपने उत्थान में कैलाश सम ऊँचाई तथा हर उपलब्धि पाने के लिए आप को शांत रहना है।

ईश्वर आपको आशिर्वादित करे।

श्रीमाता जी की इस्ताम्बुज यात्रा - 30 अक्तूबर, 1989

टर्की पहुंचने पर अत्यन्त खेद तथा मय अनुभव करते हुए मैंने यह जाना कि हमारे देशों के बीच कितना अन्तराल है। इस शिशु टर्की जिसकी यात्रा श्रीमता जी अब कर रही हैं और तथाकथित महान अमेरिका जहां श्री मां 1972 से जा रही हैं। मुस्कराते चेहरों ने मां का स्वागत किया। श्री मां ने बहुत ही प्रसन्न हो कर कहा कि उन्हें ऐसा लगता है जैसे वे लौट कर अपने जन्म-स्थान वाले घर में आ गयी हों। टर्की और भारत की सामान्यताओं के विषय में उन्होंने बताया। उनके यह पूछने पर कि क्या टर्की में ऐसे महान संत हैं जो इस देश की सुन्दर चैतन्य लहरियों को देते हैं, यह सत्य प्रकाश में आया कि यहां बहुत से सूफी संत रहे और कुमारी मेरी का भी जन्म पश्चिमी टर्की में नेफीशस नामक स्थान पर हुआ। सहजता और स्वतंत्रता का अभास टर्की के लोगों को एक विशाल हृदय प्रदान करता है तथा उनका सहजयोग में प्रवेश भी सुगम बनाता है।

प्रस्तुति बाबोते (न्यूयार्क) द्वारा

श्री माता जी की जन-वार्ता इस्ताम्बूल

2 नवम्बर, 1989 (सारांश)

कुरान का कथन है कि एक समय आएगा जब सातों आकाशों में बादल उठेंगे और पर्वत को तोड़ देंगे। तब जो वर्षा होगी वह पृथ्वी पर शान्ति तथा मानव-मात्र में परिवर्तन लाएगी। इसने साफ शब्दों में सहजयोग तथा कुंडलिनी की जागृति - जो कि मनुष्य के अहं को वश में करेगी - के विषय में कहा है। सर्वशक्तिमान परमात्मा हमारे पिता हैं। वे हमें किसी भी अन्य पिता से अधिक प्रेम करते हैं। वे चाहते हैं कि हम उनके साम्राज्य में प्रवेश करें। वे नहीं चाहते कि हम दुःख झेलें।

विशुद्धी चक्र को साफ करने के लिए आपको "अल्लाह-ओ-अकबर" कहना है। वही अल्लाह, रहीम, करीम तथा अकबर है। जिब्राल्टर की चट्टान न हो कर उनके बहुत से रूप हैं जैसे एक पिता-भाई, दादा पुत्र या पति भी हो सकता है। हमारी अन्तरआत्मा

सर्वशक्तिमान ईश्वर की ही झलक है। अतः हमारे अन्दर आत्मा का सामूहिक अस्तित्व है। आत्मा बनते ही आप सामूहिक भी हो जाते हैं। यह प्रमाण-पत्र या सूचना मात्र नही है। आप अपने मध्य-स्नायु मंडल में आकर अपने तथा दूसरों के चक्रो को अपनी अंगुलियों के पोरों पर अनुभव कर सकते हैं। आत्म प्रकाश पा कर आपका चित्त ज्योति-पुंज बन जाता है। तब आप स्वामि बन जाते हैं। बुरी आदतें छोड़ कर आप एक स्वतंत्र तथा शक्तिशाली व्यक्तित्व बन जाते हैं। आपका चित्त अत्यन्त करूणामय, दृष्टि लालच और वासना-हीन निर्मल हो जाती है। आप इतने-शक्तिशाली हो जाते हैं कि आपके कटाक्ष मात्र से दूसरे व्यक्ति में शान्ति तथा प्रेम का उदय हो जाता है। तब चित्त ज्ञान का - विराट के ज्ञान का स्रोत बन जाता है। चित्त सूक्ष्म {डायनैमिक} बन जाता है। और आप सृजनात्मक हो जाते हैं। आप इतने सशक्त हो जाते हैं कि कोई आदत आप को वश में नही कर सकती। दूसरे आप आत्मा बन जाते हैं और आनन्द लेते हैं। साक्षी बन निर्लिप्त भाव से आप नाटक को देखते हैं। अपनी समस्याओं का हल तब आप पहले से अच्छी तरह करते हैं। आनन्द सागर में आप विलय होने लगते हैं। परमात्मा के साम्राज्य में आकर हर कदम पर आपको चमत्कार होते मिलते हैं। हर कदम पर किसी को मार्ग-दर्शन करते हुए अनुभव करते हैं। आप में शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक रूप से सुधार आ जाता है। कुछ समय पश्चात् आप दूसरों को प्रकाश देने तथा लोगों के रोगों को दूर करने में तथा इस प्रकार के कार्य जो चमत्कार कहलाते हैं करने में समर्थ हो जाते हैं।